दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो पिउसों बैठी मुख फेर।। १६ ।।

अपने धनी से मुख फिराकर मत बैठो। नहीं तो परमधाम में तुम्हारा मुख कैसे ऊंचा होगा। यहां दूसरी बार तो आना नहीं है, इसलिए धनी से मुख फिरा कर मत बैठो। चलते समय दुःख साथ ले चलोगे?

तुम सुध पिउ ना आपकी, ना सुध अपनों घर।
नाहीं सुध इन छल की, सो कर देऊं सब जाहेर।। १७ ।।

तुमको अपने आपकी, पिया की, घर की और इस माया की खबर नहीं है। वह सब मैं तुम्हें बता देती हूं।

मैं देखाऊं तिन विध, ज्यों होए पेहेचान छल।
जब तुम छल पेहेचानिया, तब चले न याको बल।। १८ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! मैं तुमको इस तरह से माया दिखाऊंगी जिससे तुम्हें इस माया रूपी छल की पहचान हो जाए। जब तुम माया की पहचान कर लोगे तो इसकी ताकत तुम्हारे सामने नहीं चलेगी।

अब देखो या छल को, जो देखन आइयां एह।
प्रकास करूं इन भांत का, ज्यों रहेवे नहीं संदेह।। १९ ।।

अब इस माया को देखो यदि तुम देखने के लिए आए हो। इसकी इस तरह से तुम्हें पहचान कराऊंगी जिससे कोई संशय नहीं रह जाएगा।

अन्धेर सब उड़ाए के, सब छल करूं जाहेर।
खोलूं कमाड़ कल कुलफ, अन्तर मांहें बाहेर।। २० ।।

सब अज्ञान दूर करके माया की पहचान कराती हूं। इसके अन्दर और बाहर की कुल हकीकत जाहिर करूंगी। इसके बन्द दरवाजे, ताले और उसके खोलने की युक्ति बता देती हूं।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। २७९ ।।

खेल के मोहोरों का प्रकरण

अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखलावें खसम।। १ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! (सुन्दरसाथजी) जिस खेल को देखने आई हो उसको अच्छी तरह से पहचानो। तुमने माया के खेल को देखने की चाहना की थी, उसे धनी दिखा रहे हैं।

भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।। २ ।।

भरतखण्ड की भूमि भाग्यशाली है जहां यह अखण्ड वाणी आई है। बाकी सारा संसार माया के मोह से भरा है।

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।। ३ ।।

यहां की ही जमीन ऐसी है जहां बीज बोने से वृक्ष होता है, जिसका फल सभी को मिलता है। जैसा बीज होता है वैसा फल मिलता है, अर्थात् जैसी करनी वैसी भरनी।

Nijanand App

इनमें जो ठौर अव्वल, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदय हुई, नेहेचल बात वतन।। ४ ।।

इस सारे भरतखण्ड में जो सबसे अच्छी धरती है उसे नौतनपुरी कहते हैं। जहां पर अखण्ड मूल परमधाम की बात जाहिर हुई।

एह खेल तुम मांगिया, सो किया तुम खातिर।
ए विध सब देखाए के, पीछे कहूं वतन आखिर।। ५ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! तुमने खेल को मांगा है, तुम्हारे लिए इसे बनाया है। यह सब तुम्हें दिखलाकर वतन और खसम के दर्शन कराऊंगी।

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान।
खेले मन के भाव तें, सब आप अपनी तान।। ६ ।।

इस खेल में सभी अगुए (गुरुजन) जुदे-जुदे हैं और उनकी बोली अलग-अलग है। यह सब अपनी मन की भावना के अनुसार ही अपना राग अलापते हैं।

स्वांग काछें जुदे जुदे, जुदे जुदे रूप रंग।
चलें आप चित चाहते, और रहे जो भेले संग।। ७ ।।

इसमें अपना-अपना भेष बनाते हैं, जिनके अलग-अलग रूप और रंग होते हैं। सभी अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार मनमानी चाहते हैं और साथ में भी रहते हैं।

अनेक सेहेर बाजार चौहटे, चौक चौवटे अनेक।
अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ वसेक।। ८ ।।

यहां कई तरह के शहर, बाजार, दुकान, चौहटे, चौक हैं, जिनमें अनेक तरह का धन्धा करने वाले धन्धा करते हैं। कहीं-कहीं पर हाट और बाजार भी लगते हैं, अर्थात् यहां पर धर्मों के धाम बने हैं और धर्मों के क्षेत्र हैं। गद्दी (पीठ) हैं, मठ हैं और उनके प्रचारक प्रचार कर दुनियां को ठगते हैं। यहीं पर मेलों के रूप में हाट-पीठ लगते हैं जिनमें कई तरह की चमत्कारी लीला भी करते हैं।

भेख सारे बनाए के, करें होहोकार।
कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार।। ९ ।।

इसमें तरह-तरह के भेष बनाकर अपनी ध्वजा (पताका) लेकर शोर मचाते हैं। जिनके कारण कोई धर्म को पेट का साधन बनाता है, कोई अपने अहंकार को दिखाता है।

बिध बिध के भेख काछे, सारे जान प्रवीन।
वरन चारों खेलें चित दे, नाहीं न कोई मतहीन।। १० ।।

इनमें लोग तरह-तरह के भेष बनाकर अपने को होशियार ज्ञानी के रूप में जाहिर करते हैं। चारों वर्ण के लोग बड़े चित्त से खेलते हैं। धर्म प्रचार करते हैं। कोई अपने आपको कम नहीं कहता है।

पढ़े चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार।
आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार।। ११ ।।

इनमें कोई चारों वेदों और चौदह विद्याओं के जानने वाले हैं। आप भी माया में मस्त होकर दुनियां वालों को भी माया में मग्न कर रखा है।

Nijanand App

वरन सारे पसरे, लोभें लिए करें उपाय।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माय।। १२ ।।

चारों वर्ण वाले अपना प्रसार करते हैं और उनमें लोभ के ही उपाय करते हैं। वे काम, क्रोध की अग्नि में जल रहे हैं जो हकीकत में अग्नि नहीं है।

नाहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध।
सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध।। १३ ।।

जिसके साथ कभी पहचान नहीं उससे शादी करते हैं। सब कुटुम्ब और बिरादरी वाले मिलकर माया के बन्धन में बांध देते हैं।

सनमंध करते आप में, उछरंग अंग न माए।
केसर कसूंबे पेहेर के, सेहेर में फेरे खाए।। १४ ।।

जब शादी करते हैं तो बड़ी खुशी होती है और पीले-लाल वस्त्र पहनकर जगत को दिखाते हैं (बारात निकालते हैं)।

सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र।
कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र।। १५ ।।

दूल्हा का शृंगार करके घोड़े पर बैठाते हैं। कोई छत्र लेकर साथ में चलते हैं। कई आगे नाचते हुए बाजे बजाते चलते हैं।

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार।। १६ ।।

कई सामने से मुर्दे की अर्थी लेकर हाय-हाय करते चले आते हैं। उनके अंग में दुःख नहीं समाता। बाजार में छाती पीटते हैं।

गाड़ें जालें हाथ अपने, रुदन करें जलधार।
सनमंधी सब मिलके, टलवलें नर नार।। १७ ।।

वह अपने ही हाथों से मुर्दों को गाड़ देते हैं या जला देते हैं तथा आंसुओं की धारा बहा-बहाकर रोते हैं। सगे सम्बन्धी मिलकर शोक मनाते हैं और दुःखी होते हैं।

जनम होवे काहू के, काहू के होवे मरन।
कोई हिरदे हंसे हरखे, कोई सोक रुदन।। १८ ।।

किसी के यहां जन्म होता है। किसी के यहां मरण हो रहा है। किसी के दिल में बड़ी खुशी है। कोई दुःख से रो रहा है।

धन खरचें खाएं गफलतें, आपे बुजरक होए।
कीरत अपनी कराए के, खेल या बिध होए।। १९ ।।

कोई अपने को अपनी औकात से बड़ा दिखाने के लिए धन खर्च करते हैं और अपनी थोड़ी-सी महिमा कराकर पीछे दुःखी होते हैं।

Nijanand App

कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए।
किसी के अवगुन बोले, किसी के गुन गाए।। २० ।।

कोई कंजूस है, कोई दानी है। कोई मांगने वाले भिखारी कहलाते हैं। किसी के गुण गाए जाते हैं। किसी की निन्दा की जाती है।

कोई मिने बेहेवारिए, कोई राने राज।
कोई मिने रांक रलझले, रोते फिरें अकाज।। २१ ।।

कोई आपस में सांसारिक व्यवहार करते हैं। कोई राणा है। कोई राजा है। कोई गरीब बनकर अकारण रोता है।

कोई पोंढ़े पलंग हेम के, कोई ऊपर ढोले वाए।
बात करते जी जी करे, ए खेल यों सोभाए।। २२ ।।

कोई सोने के पलंग पर सोते हैं। कोई ऊपर पंखे झलते हैं। कई आगे सेवा में खड़े 'जी जी' करते हैं। इस तरह से यह खेल की शोभा है।

कोई बैठे सुखपाल में, कोई दौड़े उचाए।
जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए।। २३ ।।

कोई पालकी में बैठते हैं। कोई पालकी उठाकर चलते हैं। कोई इनकी सेना में आगे चलते हैं। यह खेल इस तरह से शोभायमान है।

कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल।
अति बड़े बाजंत्र बाजे, जाने राज नेहेचल।। २४ ।।

कोई तखतरवा (बड़े रथ) पर बैठते हैं। उनके आगे हाथी-घोड़े पैदल चलते हैं। बड़े-बड़े बाजे बजते हैं। वह समझते हैं कि हमारा राज्य अखण्ड है।

साम सामी करे सैन्या, भारथ होवे लोह अंग।
लज्या बांधे होवें टुकड़े, कहावें सूर अभंग।। २५ ।।

कई आमने-सामने फौजें खड़ी करके तलवार और भालों से लड़ते हैं। वह अपने को राजा कहलाने के लिए लड़ मरते हैं तथा हाथ-पैर तोड़ लेते हैं।

कोई मिने होय कायर, छोड़ लज्या भाग जाए।
कोई मारे कोई पकड़े, कोई गए आप बचाए।। २६ ।।

उनमें कोई कायर होकर शर्म के मारे पीछे भाग जाते हैं। कोई मारता है। कोई पकड़ता है तथा कोई अपने को बचाता है।

कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक।
जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक।। २७ ।।

कोई जीतता है तो कोई हारता है। किसी को हर्ष होता है तो किसी को दुःख होता है। जो चारों तरफ जीतकर आता है, वह पृथ्वीपति कहलाता है।

Nijanand App

कोई करे ले कैद में, बांधत उलटे बंध।
मारते अरवाह काढ़ें, ए खेल या सनंध।। २८ ।।

किसी को कैद में डालते हैं। कई उनके बन्धन में बंध जाते हैं जिनको मार-मारकर प्राण निकालते हैं। यह खेल इसी तरह का है।

जीते हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए।
हारे सारे सोक पावें, सो करें मुख त्राहे त्राहे।। २९ ।।

कोई जीतने पर खुशी मनाता है और उसके अंग में उमंग नहीं समाती है। हारे हुए लोग शोक मनाते हैं तथा तोबा-तोबा करते हैं।

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग।। ३० ।।

कई रोगी घूमते हैं। कई लूले, टूटे अंग वाले तथा अपंग हैं। कई अन्धे हैं। इस तरह से खेल में आनन्द हो रहा है।

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
कई पवाड़े करें कोटल, ए होत खेल या रीत।। ३१ ।।

कई अपने पेट के वास्ते मांगते फिरते हैं और अपनी फजीहत कराते हैं। इस तरह से खेल में बिना हिसाब झंझट है।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३१० ।।

खेल में खेल

अब दिखाऊं इन विध, जासों समझ सब होए।
भेले हैं सत असत, सो जुदे कर देऊं दोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं अब तुमको इस तरह से दिखाती हूं जिससे तुम्हें सब समझ आ जाए। यहां सत (परब्रह्म) और झूठ (माया) को लोगों ने इकट्ठा समझ रखा है, उन दोनों सत और असत को जुदा-जुदा करके दिखाती हूं।

इन खेलमें जो खेल है, सो केहेत न आवे पार।
इन भेखोंमें भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार।। २ ।।

इस खेल में जो खेल हो रहा है, वह बेशुमार है और कहनी (वर्णन) से परे है। विभिन्न भेषों में तरह-तरह के भेष दिखाई पड़ते हैं। कुछ थोड़ा सा उनके प्रति विचार सुनो।

कई द्योहरे अपासरे, कई मुनारे मसीत।
तलाव कुआ कुंड बावरी, मांहें विसामां कई रीत।। ३ ।।

यहां पर कई मन्दिर, कई जैन मन्दिर और कई मुसलमानों की मीनारों वाली मस्जिदें हैं। कई तालाब, कुण्ड, बावरी और तीर्थ स्थान हैं, कई धर्मशालाएं हैं। इस तरह धर्मों की रस्में हैं।

Nijanand App